1

आर्यो की देन– Legacy of Aryans

सैंधव संस्कृति के विनाश के पश्चात भारत में जिस नवीन सभ्यता का विकास हुआ, उसे वैदिक अथवा आर्य सभ्यता के नाम से जाना जाता है। डा0 राध कुमुद मुखर्जी के अनुसार भारत का इतिहास एक प्रकार से आर्य जाति का इतिहास रहा है। आर्यो का इतिहास मुख्यतः वेदों से ज्ञात होता है। जिसमें मानव जाति को ज्ञात प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इसके अलावा सहिता, ब्राह्मण, आरण्यक तथा उपनिषद आदि वैदिक साहित्य से भी आर्यो के इतिहास के बारे में जानकरी मिलती है।

यद्यपि आर्य कालीन संस्कृति में विलुप्त हो चुके हैं। तथापि आज भी अधिकांशतः राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, साहित्यिक व आर्थिक एवं अन्य क्षेत्रों में इनके योगजनों को स्पष्टतया देखा जा सकता है।

वर्तमान गणतंत्रात्मक राजनीतिक प्रणाली के आधार भूत तत्व भारतीयों ने आर्यों से विरासत में प्राप्त की है। वैदिक साहित्य में 'गण' गणपति जयेष्ठक आदि शब्दों का प्रयोग मिलता है। ऋग्वेद के उद्धरण (10–124–8) में राजा के निर्वाचन का स्पष्ट उल्लेख है। अथर्ववेद में भी राजा का समिति में निर्वाचित होने का उल्लेख मिलता है। आर्यों के प्रशासनिक तंत्र में सभा समिति नामक संस्थाओं का उल्लेख प्राप्त मिलता है। जो राजा के ऊपर नियंत्रण का कार्य भी करती थी। इन सभी का परिवर्धित एवं संवर्धित रूप भारतीय राजनीतिक प्रणाली में आज देखा जा सकता है।

हजारों वर्ष पूर्व आर्यों द्वारा स्थापित वर्णव्यवस्था आज भी भारतीय समाज में विद्यमान है। ऋग्वेद के दशवें मंडल में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शुद्र वर्णों को स्पष्टतः उल्लेख मिलता है। आर्यों द्वारा बनायी गयी आश्रम व्यवस्था में से ब्रह्मचर्य एवं गृस्थाश्रम आज भी भारतीयों द्वारा अनुपालित है। आर्यों द्वारा प्रतिपादित 16 संस्कारों में से आज भी जात कर्म नामकरण यद्योपवीत, विवाह, अंतेष्ठि आदि संस्कार किसी न किसी रूप में भारतीय समाज में जीवित हैं। वर्तमान युग की भांति आर्य भी परिपम्ब आयु प्राप्त करने के बाद ही परिणय सूत्र में बधंते थे। आर्यों के समय भी तरूण तरूणियों को जीवन साथी चुनने की स्वतंत्रता थी। भाई–बहन में वैवाहिक सम्बंधों की मान्यता नहीं प्राप्त थी। ऋग्वेद के एक सुक्त (1085) में वैवाहिक अनुष्ठान का विस्तृत विवरण मिलता है। जिसका पालन आज भी किया जाता है। गोद लेने की प्रथा भी प्रचलित थी, जिसे आज कानूनी वैधता प्राप्त है।

विधवा विवाह का प्रचलन अथर्वेद के एक मंत्र में मिलता है। मृत पति से दूर ले जायी गयी जीवित स्त्री को परिणीत होते हुए मैने देखा है।

शतपथ ब्राह्मण के अनुसार– ब्राह्मण ऋषि चयन ने क्षत्रिय राज कूमारी सुकन्या के साथ विवाह किया था। इससे अन्तर्जातीय विवाह का आभास मिलता है। आर्यकालीन नारियां श्रृंगार के रूप में अधुनातम युग की भांति स्वर्णाभूषण का प्रयोग करती थीं तथा पुरूषों के समान शिक्षा प्राप्त करती थीं तथा यज्ञिक कर्मकांडो में समान रूप से भाग लेती थी।

आधुनिक युग के अनाजों की भांति आर्य भी ब्रिही, यव, तिस, काश, सरसों, गन्ना आदि का प्रयोग करते थे। जिसका उल्लेख वैदिक साहित्य में मिलता है। आर्य लोग सुरा पीते थे लेकिन उसे पीना अच्छा नही माना है। मनोरंजन के सभी तरीके नृत्य गायन, बाद्य, धुड़दौड़ इत्यादि जो आर्यो द्वारा प्रयोग में लाये जाते थे आज भी भारतीय समाज में मौजूद है।

आर्यों के धार्मिक विश्वास का प्रारम्भ ऋग्वेद के इन शब्दों से फूट पड़ा है–"अस्तित्व, अनस्तित्व कुछ भी नहीं था वायु एवं आकाश भी नहीं था, फिर वह क्या है जो गतिशील है।" डा0 राधकृष्ण ने कहा है कि–"इन शब्दों में आत्मिक खौज, अध्यात्मिक अस्थिरता तथा बौद्धिक संदेह वाद की अभिव्यक्ति हुई है और यही से भारत के सांस्कृतिक विकास का प्रारम्भ हुआ है।"

आर्य लोग विभिन्न देवताओं, मित्र, सूर्य, उषा, इंद्र, रूद्र, मरूत, पृथ्वी, अग्नि उषा, सरस्वती आदि की उपासना करते थे और याज्ञिक कर्मकांडो द्वारा इन्हें प्रसन्न करने का प्रयास भी करते थे। बहुदेववादी होते हुए भी ऋग्वेद के एक सद बिद्रा बहुघा वंदति की सदुक्ति में विश्वास रखते थे। धार्मिक कार्यो में देव यज्ञ, पितृयज्ञ, नृयज्ञ, ऋषि, या आदि का सम्पादन वे करते थे। इसका किसी न किसी रूप में आज भी समाज में प्रचलन देखा जा सकता है।

आर्यों के ऐसे मन्तव्य एवं आदर्श थे जैसे ऋत व्यवस्था या सत्य कतिपय जो उनके धार्मिक जीवन को अनुप्रमाणित करता है। ऋत की व्याख्या सृष्टि की नियमितता, भौतिक एवं नैतिक व्यवस्था, अंतरिक्षीय व्यवस्था आदि रूपों में की गयी है। इसका स्वरूप आज भी भारतीय संस्कृति में जीवित है। सत्यमेव जयते जैसा उदघोश आज भी हमारी प्रेरणा का स्त्रोत बना हुआ है।

वैदिक आर्यो ंका धार्मिक दृष्टिकोण बड़ा ही व्यापक एवं उदार था। वे धर्म का निम्न लक्षण बतलाते है।

यतोडश्युदय निः श्रेयस सिद्रिः सघर्मः आर्यो ने ही वसुधैवकुहुम्बकसं एवं सत्यं, शिवं सुंदरम् जैसे उच्च आदर्शो की सुधार शिक्षा रखी। धर्म निप्रेक्षता, धार्मिक सहिष्णुता आदि सिंद्धात आर्यो की धार्मिक अनुभूति के फल है जो हमारी संवैधानिक पृष्ठभूमि की प्रमुख विशेषता है।

वैदिक यज्ञों के जटिल कर्मकांडो के विरूद्ध जो प्रतिक्रिया, चिंतक मुनियो द्वारा शुरू की गयी थी इसका महत्वपूर्ण परिणाम– भागवद धर्म का प्रारम्भ था। इससे सम्बंधित ग्रंथ श्रीमद भागवद गीता तथा इसके सिद्धांत आज विश्वभर में लोकप्रिय रहें है।

सृष्टि की उत्पत्ति किस प्रकार हुई उसका उल्लेख ऋग्वेद के नासदीय सूक्ति में मिलता है। आत्मा की अमरता एवं पुर्नजन्म की मान्यता का सिद्धांत भी आर्यो को ही है।

ब्रह्मज्ञान से सम्बंधित बाते उपनिषदों में भरी पड़ी है। समस्त भारतीय दर्शनों का विकास एवं उद्रभव आर्य साहित्य से ही हुआ है। इतिहास विद सगीगार के अनुसार आर्यों का धर्म तथा दर्शन प्रारम्भिक अवस्था में ही प्रौढ़ था तथा आगे आने वाली पीढ़ियो के सम्मुख अनेक आदर्श तथा मापदण्ड का स्त्रोत बना रहा है।

चिकित्सा तथा खगोल विद्या आदि क्षेत्र में भी हम आर्यो के अभारी है। आर्यो के ग्रंथ अथर्वेद में अनेक रोगो का उल्लेख मिलता है। वैदिक साहित्य से ही तमाम नदियों, पहाड़ो प्राकृतिक चीजों का ज्ञान आज हमें प्राप्त है।

आर्यो द्वारा प्रदत्त संस्कृत भाषा भारतीयों के लिए अमिर धरोहर है। वेदों के उपरांत अधिकांश लिखे गये ग्रंथ संस्कृत भाषा में ही है। आज भी यह अपने महत्व व प्रभाव को अक्षुण बनाये हुए है। डा0 रोमिला थापर का मत है कि वैदिक साहित्य में जिसे संस्कृत भाषा का प्रयोग किया गया है। उसका प्रभाव द्रविड़ भाषा में भी देखा जा सकता है।

अर्यो ने एक समुन्नत कृषि व्यवसाी का विकास किया था। वे खेतों में अधिक उपज के लिए खादर का प्रयोग करते थे। व्यापार के रूप में आर्य लोग नावों, रथों तथा अन्य उपयोगी पशुओं का प्रयोग करते थे। उपर्युक्त कृषि व व्यापार व्यवस्था किसी न किसी रूप में आज भी प्रयलित है। ऋग्वेद में निष्क का उल्लेख मिलता है। डा0 भंडारकर का मत है कि निष्क निश्चित माप की चित्रित तथा अंकपूर्ण मुद्रा थी। इस प्रकार स्पष्ट है कि हजारों वर्ष पूर्व आर्यो ने वस्तु विनिमय हेतु मुद्रा का प्रचलन शुरू कर दिया था।

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि जिस सभ्यता तथा संस्कृति को भारतीय सभ्यता व संस्कृति कहा जाता है, उसकी आधार शिला कई हजार वर्ष पूर्व आर्यो ने ही रखी थी। मायंत्री मंत्र का यह उदघोष–" ऊं भूर्भुवः स्व तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धी महि धियो योहलः प्रचोदयात्।" हजारो वर्ष पूर्व मुक्ति का साधन माना जाता था और आज भी यह भारतीय समाज का एक अभिन्न अंग तथा मुक्ति प्राप्त का साधन व सबसे पवित्र मंत्र माना जाता है।

डा0 J.N. Sarkar ने उचित ही लिखा है कि–"आर्यो के सिद्धांतों एवं आदर्शो के स्तम्भ पर ही भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति की निर्माण किया गया था, जो शताब्दियों के क्षंक्षाबातो का सामना करता हुआ आज भी सुरक्षित रह कर भारतीय जनमानस में समाहित है।"

————————————————————

भारत के प्राचीन नगर

(1) नालन्दा– कुमारगुप्त ने पांचवी सदी में इस नगर की नींव डाली थी। नरसिंह गुप्त आदि ने भी यहाँ सुन्दर बिहार तथा भवनों का निर्माण किया।

बौद्ध धर्म तथा शिक्षा का केन्द्र विश्व विद्यालय को बख्तियार खिलजी ने बारहवी सदी के अंत में नालंदा पर आक्रमण कर इसके भवनों को ध्वस्त कर दिया तथा अनेक भिक्षुओ को मौत के घाट उतार दिया।

(2) कपिलवस्तु– सांख्य दर्शन के प्रणेता महर्षि कपिल की तपोभूमि होने के कारण इसका नाम कपिलवस्तु पड़ा। यह शाक्य राज्य की राजधानी थी। जिसका राजा शुद्धोधन था। कपिलवस्तु के लम्बिनी नामक स्थान पर महात्मा बुद्ध का जन्म हुआ था। यह सम्भवतः गोरखपुर तथा नैपाल की सीमा पर कहीं स्थित था। शाक्यों ने यहाँ नयोग्राथा नामक विहार बनवाया था। अशोक की यात्रा लुम्बिनी (20 वर्ष) कर मुक्त।

(3) काशी– काशी भारत के अन्य नगरों से काफी प्राचीन है। पुराणो तथ स्मृतियों में भी इसका वर्णन एक तीर्थ स्थान के रूप में मिलता है। ऐसी मान्यता है कि वरूणा और अस्सी नदियों के बीच स्थित होने के कारण काशी को वाराणसी भी कहा गया। काशी जनपद 16 महाजन पदों में से एक था। छठी शताब्दी इसा पूर्व में कोमल में मिला लिया गया।

ऐतिहासिक विवरण– अशोक स्तम्भ– बुद्ध का प्रथम उपदेश धम्म चक्रपर्वतन शुंण, कण्व, तुषाल तथा गुप्तों ने शासन किया। ह्वेन सांग ने भी इसका वर्णन किया है।

व्यापारिक दृष्टि से भी काशी प्राचीन काल से ही विख्यात रहा है। यहाँ पर अनेक प्रकार के उधोग धंधे थे। सूती, रेशमी, उनी, वस्त्र यहाँ बनाये जाते थे। हांथी दांत तथा मूर्ति निर्माण का कार्य भी उन्नति पर था। तीसरी शताब्दि के बाद यह नगर शिक्षा धर्म तथा संस्कृति के प्राचीन केन्द्र के रूप में विख्यात होने लगा। ऐसा विश्वास था कि यह नगरी मोक्ष दायिका है। ह्वेन सांग भी इसका धार्मिक वर्णन करता है। राजतरिंगिणी से ज्ञात होता है कि काश्मीर के शासक हर्ष ने यहाँ आकर संयास किया था।

(4) कान्कुण्ज– रामायण से ज्ञात होता है कि इस नगर की स्थापना कुशनाम ने डाली थी। ह्वेन सांग ने इसे कुसमपुर कहा है। मौखरियों ने इसे अपनी राजधानी बनाया। हर्ष की राजधानी– कन्नौज की धर्म सभा, शिक्षा तथा साहित्य– बौद्ध धर्म– हर्ष स्वीकृति पर प्रतिहार तथा महड़वाल(जयचंद) शासकों ने भी इसे अपनी राजधानी

बनाया। मौखरि नरेश भी उत्साही विद्या प्रेमी थी। इस काल में राजशेखर तथा ज्ञानेश्वर पैदा हुए थे।

(5) सांची– यह M.P. की राजधानी भोपाल के निकट स्थित है। यहाँ पर अशोक ने अनेकों स्तूप बनवाये तथा लेख खुदवाये। शुंग काल में इस नगर का बहुमुखी विकास हुआ।

(6) चम्पा– अंग जनपद की राजधानी चम्पा खाई तथा प्राचीर से धिरा हुआ यह विशाल लगर जैनो के 12 वें तीर्थ कर का जन्म स्थान भी था। महावीर तथा बुद्ध दोनों यहाँ निवास किये थे। चम्पा भारत के छः प्रधान नगरों में से एक था। फाहियान ने भी इसका वर्णन किया है। यहाँ असंख्य बौद्ध भिक्षु निवास करते थे।

(7) तक्षशिला– रामयण के अनुसार भरत के पुत्र तक्ष ने इसका निर्माण कराया था। यह पश्चिमोत्तर भारत में पूर्वी गंधार प्रदेश की राजधानी थी। यह मौर्यो के उप्रय पथ राज्य की भी राजधानी थी। मौर्यो के बाद यवनो, शकों तथा कुषाणें ने यहाँ शासन किया। मुद्रानिर्माण व गंधार शैली यूनानी प्रभाव, व्यापारिक केन्द्र इसी नगर के द्वारा भारत का सम्बंध मध्य एशिया से स्थापित हुआ था।

(8) कलिंग– यह महानदी तथा गोदावरी नदियों के मध्य (उड़ीसा) स्थित था। कलिंग युद्ध अशोक तथा खारवेल के मध्य हुआ। कलिंग के हाथी सबसे अच्छे होते थे। –(अर्थशास्त्र)

(9) कुरूक्षेत्र– कुरू व पांचाल यह 16 महाजनपदों में से एक था। यह सरस्वती और द्वषवती नदियों के मध्य स्थित था। (इसमें कौरव पाण्डव युद्ध हुआ था।)

(10) गया– महाभारत तथा अनेक पुराणों में गया को एक धार्मिक स्थान माना गया है। बुद्ध को ज्ञान भी यही प्राप्त हुआ था। ह्वेन सांग ने लिखा है कि एक महान ऋषि गया के नाम पर इसका नाम गया पड़ा था सिंहत्र नरेश मेघवर्ष ने यहाँ एक संधाराम का निर्माण किया था।

(11) उज्जयिनी– शिप्रा नदी तट पर स्थित उज्जयिनी नगर को अच्युतगामी ने बसाया था। यह अवस्ति राज्य या पश्चिमी मालवा की राजधानी थी। यह नगर प्रधोत वंश की भी राजधानी थी। बिन्दुसार के समय अशोक यहाँ का राज्य पाल थां यह धार्मिक तथा बौद्ध धर्म का केन्द्र था। मोक्ष प्रदान करने वाले सात नगरों में इसका भी नाम था। शुको के बाद गुप्तों ने भी इस पर शासन किया। यह महत्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र था। ह्वेनसांग तथा बाणभट्ट दोनों ने इसका वर्णन किया है।

(12) ताम्रलिप्ति– यलमी के अनुसार यहाँ गंगानदी गुहाने पर बसा था। यह बौद्ध धर्म का महत्वपूर्ण केन्द्र था। फाहियान के अनसुार– यहाँ अनेक मठ थे, जिनमें बौद्ध भिक्षु

रहते थे। यह महत्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र भी था जहाँ से चीन बर्मा, लंका तथा हिन्दचीन व दक्षिण पूर्व एशियायी देशों के साथ व्यापार होता था।

(13) गंधार– गंधार प्राचीन 16 जनपदों में से ऐक था। आधुनिक रावलपिंडी और पेशावर पुष्क्लावती और तक्षशिला यहाँ की राजधानियां थी।

(14) मोहष्मती– यह M.P. के नर्बदा नदी पर बसा था। यह सूत के व्यापार के लिए प्रसिद्ध था।

(15) अहिच्छत्र– महाभारत के अनुसार यह उत्तरपांचाल की राजधानी थी। U.P. के बरेली जिले का राजनगर ही अहिच्छत्र था। राजा अच्युत की मुद्रा यही से प्राप्त हुई है। इसे समुंद्रगुप्त ने पराजित किया था। ह्वेन सांग यहाँ गया था।

(16) अवन्ती– 16 जनपदो मे था– यह विन्ध्य पर्वत के उत्तर तथा पश्चिम में बसा था। यह कुछ कालीन चार प्रमुख जनपदों में से होते हुए भी मौर्य साम्राज्य में मिला लिया गया था।

यहाँ बौद्ध धर्म का काफी प्रभाव था। चन्दप्रधोत यहाँ का राजा था। इसकी राजधानी उज्जयिनी थी। इस नगर की ख्याति शिक्षा तथा व्यापार के क्षेत्र में अत्यधिक थी।

(17) एलिफैन्टा– ये गुफा में बम्बई के पास है। इनको राष्ट्रकूट काल से हूमर सेन शैली में बनाया गया था। इसका असली नाम धारा है। पुर्तगलीथो ने पथ्यर की हाथियों के बने होने कारण इसका नाम ऐलिफैन्टा दिया था। यहाँ हिन्दू देवी देवताओं की मूर्ति या पत्थर को काट कर बनायी गयी है। जिसमें शिव की त्रिमूर्ति तथा अर्द्धनारीश्वर की मूर्ति सबसे सुंदर व प्रसिद्ध है।

(18) काची– दक्षिण की काशी नामक कांची नगरी तमिलनार राज्य में स्थित थी। यह पल्लव शासकों की राजधानी थी। धार्मिक, साहित्यिक, राजनीतिक तथा शिक्षा का यह प्रसिद्ध केन्द्र था। कांची विश्व विद्यालय सम्पूर्ण भारत तथा सीमावर्ती विश्व में भी प्रसिद्ध था। पल्लवों ने यहाँ उच्चकोटि की मंडियों (द्रविड शैली) का निर्माण करवाया था। ह्वेनसांग भी इसकी यात्रा किया था। यह एक व्यवसायिक केन्द्र भी था। यहाँ भारत का अन्य देशों के साथ व्यापार होता था।

(19) भ्रावस्ली– राप्ती नदी पर स्थित यह नगरी कोशल जनपरद की प्रमुख नगरी थी। आधुनिक U.P. का गोंडा जिला प्राचीन भ्रावस्ली था। यह बौद्ध धर्म का केन्द्र था। इसके अलावा सांस्कृतिक ऐतिहासिक व व्यवसायिक दृष्टि से भी यह काफी प्रसिद्ध था।

(20) मथुरा– मथुरा ई0 पूर्व छठी शताब्दी में शूरशेन महाजन पद की राजधानी तपस्या स्थली तथा श्री कृष्ण की लीला भूमि भी रही है। इस पर यवनों ने आक्रमण किया था। जिन्हें पुष्पमित्र ने मार भगाया था। इसके बाद शको तथा कुषाणों ने राज्य किया। बुद्ध

ने यहाँ बौद्ध धर्म का प्रसार तथा प्रचार किया था। यह सूत्री वस्- शरिका के लिए विशेष प्रसिद्ध था।

(21) वैशाली– वैशाली नगर को ईदन्वा कुवंशीय राज विशाल ने बसाया था। इसी कारण इसका नाम वैशाली पड़ा। यह विहार प्रांत के मुजफ्फर पुर जिले के बसाढ़ ग्राम में (गंडक नदी के तट पर)स्थित था। यहीं पर महावीर का जन्म हुआ था। यहाँ लिच्छवियो का महत्वपूर्ण शासन था। महावीर बुद्ध ने भी कई बार यहाँ यात्रा किये थे, अम्रापाली यही की थी। चन्द्रगुप्त प्रथम की रानी कूमार देवी यही की थी। यहाँ द्वितीय बौद्ध संगीत हुई थी।

————————————————————

मध्य कालीन नगर व राज्य

(1) अहमद नगर, रीजापर, गोलकुन्डा, वयर, वीदर बहमनी राज्य के ढूरने के बाद दकन में एक के बाद दूसरी पांच विभिन्न सल्तनतों का उदय हुआ। यहां इनके संस्थापकों के नाम पर इनका वंश का नाम है।

बराव – इमादशाही वंश
बीजापुर – आदिल शाही वंश
अहमद नगर – निमाशाही वंश
गोल कुंडा – कुतुबशाही वंश
वीदर – वरीदशाही वंश

(2) गुलवर्ग– (अलाउद्दीन खिलजी का आक्रमण) यह वहमनी राज्य की राजधानी थी। जिसे अलाउद्दीन खिलजी ने अपनी राजधानी बनाया था। स्थापत्य व शिखा का केन्द्र।

(3) औरंगाबाद– यह महाराष्ट्र में खांव नदी पर बसा हैं यह अपनी कलाकृति के लिए विश्वविख्यात है। यहाँ गुफाये, धैत्य गृह, स्तूप मूर्तिकला, स्थापत्य कला, बिहार आदि निर्मित है। गुप्त काल की कुछ पाषाण प्रतिमायें और गावाद की गुफाओं में उत्कीर्ण है। औरंगाबाद जिले में ही अजंता, एलोरा में कुछ गुप्त युग की मूर्तिया उत्कीर्ण है। औरंगाबाद में औरगजेब ने अपनी पत्नी रबिया, उद्र दौरानी की स्मृति में 1679 में एक मकबरा बनवाया था।

(4) देवगिरि– (महाराष्ट्र) यादव राज्य– राजधानी दौलताबाद
अलाउद्दीन की विजय 1294 A.D. में शासक रामचन्द, मुहम्मद तुगलक– राजधानी परिवर्तन

(5) यह ताप्ती नदी घाटी में स्थित था। इसके उत्तर में विन्श्याचल दक्षिण में दक्षिण का पठार था।

खानदेश को मलिक अहमद नामक व्यक्ति ने बसाया था। यह मुहम्मद तुगलक के साम्राज्य का एक भाग था। 1670 में शिवाजी का इस पर अधिकार हो गया।

(6) अनहिलवाड़ा– यह बंधेल शासक भीम द्वितीय की राजधानी थी। मोहम्मद गोरी के आक्रमण के समय (1417879) यहां का शासक मूलराज द्वितीय था।

(7) कालिंजर– आधुलिक वांदालिका– मिहिर भोज प्रथम (प्रतिहार) ने इसे जीका कर अपने राज्य में मिलाया था। यह चंदेल शासकों का प्रमुख नगर भी रहा है। महमूद

गजनवी का 13 वां आक्रमण यहा हुआ था। 1202 में एबक ने अधिकार कर लिया। 1545 में शेरशाह ने तथा 1569 में अकबर ने आक्रमण कर अपने अधीन कर लिया।

(8) चौंसा– यह विहार प्रांत के शाहाबाद में स्थित है। प्राचीन धारण, यह च्यवन ऋषि की तपोभूमि थी। शेरशाह व हूमायू युद्ध 1539 निर्यायक युद्ध।

(9) चंदेरी– यह मालवा व बुंदेलखंठ की सीमा पर स्थित था। यह शक्तिशाली राजपूत राज्य था। बाबर की चंदेरी विजय (सूरी, राजा मेदिनीराय)

खानवां के युद्ध में – सभासंग्राम को बाबर के विरूद्ध सैनिक सहायता दिया था।

(10) अजमेर– राजस्थान– सूफी चिश्ती की दरगाह, पुष्करझील।

(11) खानवां– खानवां आगरा से लगभग 40 मील दूर सीकरी के पास स्थित है। खानवां का युद्ध– 1527 राणा सांगा व बाबर के मध्य।

(12) आगरा– 1506 में सिकन्दर लोदी ने बसाया था।

(13) आमेर (जयपुर)– कछवाडा राजपूत– अकबर से सम्बंध भरमल, भगवानदास, मानसिंह आदि।

(14) बीकानेर– राजस्थान, राठौर वंश।

(15) उदयपुर– उदयपुर मेवाड़ (राजस्थान) में स्थित है। 1236 में यह दिल्ली सल्तनत के अधीन था। अकबर के अधिपत्य में।

(16) वीदर– यह दक्षिणी भारत में वहमनी राज्य के तहत् था। मुहम्मदन तुगलक के राज में।

(17) पानीपत– यह हरियाना के कसाल जिले में स्थित है। युद्ध–1526(प्रथम), 1556(द्वितीय), 1761(तृतीय)।

(18) लखनौती– यह पश्चिती बंगाल की राजधानी थी।

(19) कालपी– यह चंदेल शासकों के राज्य के अंतर्गत था। तैमूर के आक्रमण के समय यहाँ (प्रांतपति) शासक स्वतन्त्र रूप से शासन करने लगा था। बलहोल लोदी ने कालपी को जीत कर अधीन किया था।

(20) मुर्शिदावाद– (प0 बंगाल) – मुगलकाल में मुर्शिद कुली शां यहाँ का दिवान नियुक्त किया गया था।

यह मीर जाफर तथा सिराजुद्दौला की राजधानी भी थी।

(21) रोहताश गढ़ (बिहार)– अपने सुदृढ़ किले के लिए प्रसिद्ध है। शेरशाह ने इस दूर्ग पर अपना अधिकार स्थापित किया था।

(22) अटक– यह तक्षशिला की राजधानी थी। यह पाकिस्तान में पेशावर के निकट स्थित है। अकबर ने 1581 में यहां एक किले का निर्माण करवाया था।

(23) पन्हाला– यह बीजा पुर के अधीन एक सुदृढ़ दुर्ग था। शिवाजी ने इसे जीत कर अधिकृत कर लिया, लेकिन शीघ्र ही बीजापुरी सुल्तान ने पुनः कब्जा कर लिया।

(24) पुरन्दर– यह दुर्ग शिवाजी के अधीन था। आमेर का राजा जयसिंह– शिवाजी संधि–1665

(25) रणथम्भौर– रणथम्भौर में पृथ्वी राज चौहान के निर्कासित पुत्र गोविन्द राज ने अपनी राजधानी बनायी थी। 1301 में अलाउद्दीन ने आक्रमण किया। 1568 में अकबर ने आक्रमण किया। इस समय यहाँ सर्जनराय बड़ा शासक था।

(26) ग्वालियर– (M.P.) दुर्ग का महत्व 1195–96 मुहम्मद गोरी का असफल आक्रमण, 1231 इल्तुतमिश का घेरा। अंततः एक वर्ष बाद कठिन परिश्रम के बाद अधीन कर लिया। लोदियों ने राज्य किया। अकबर ने अधिकृत किया – ग्वालियर के सिंधिया – तानसेन का मकबरा भी ग्वालियर में है।

(27) रायपूर– यह दक्षिण प्रांत के कम्बिली राज्य के अंतर्गत कृष्णा व तुंग भद्रा नदियों के बीच स्थित था।

(28) मेवाड़– इसकी राजधानी चित्तौड़ थी। सिसौदिया वंश –सातवी शताब्दी से ।

———————————————————————